Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)
UGC Approved Sr.No.64259
Vol - V Issue-IV APRIL 2018 ISSN 2349-638x Impact Factor 4.574

सारंगी के समकक्ष उत्तर भारतीय वाद्य

डॉ आलोक शर्मा

उत्तर भारतीय संगीत में सारंगी के अलग अलग क्षेत्रों में अलग अलग प्रकार की होती रही है। इसमें समय समय पर काफी परिर्वतन भी हुये। सारंगी के प्रकारों की चर्चा से पहले हम सम्पूर्ण उत्तर भारतीय संगीत में प्रयुक्त होने वाले उन सभी वाघों की चर्चा करेंगे जो सारंगी के समकक्ष है या सारंगी के करीब और गज से बजाये जाते है।

भारतीय लोक वाघ परम्परा में सारंगी अत्यंत प्रभावी रही है बच्चों के खिलोने चिकारी से लेकर विकसीत वाघ कमान से बजाये जाते है। इसलिये सारंगी के साथ इन वाघों की चर्चा आवश्यक है हो सकता है कि इन गज लोक वाघों से ही सारंगी का विकास हुआ हो । उडीसा प्रांत के म्योरगंज जिले में मांझी आदिमवासी एक विशेष प्रकार के धागे अथवा सूत के बजाये गये एक तार जिसका नाम **केनडेरा** कमानी से बजाते है । उस तार को कसकर या ढीला करके मन चाहे स्वर में बजाते है। उडीसा में साधु संत ऐसे ही वाघ का वादन करते है उनके केनडेरा वाघ का अनुनादी नारीयल के खोल के बनाये जाते है और उपरी भाग बांस का बनाया जाता है। केरल की पल्लव जाति के लोंगों द्वारा नाग देवता को प्रसन्न करने के लिए गीतों में संगत करने के लिए एक तार की पल्लवन वीणा का प्रयोग करते है ।

पल्लवन वीणा तथा इसकी कमान के चार चुन्नम्बुवल्ली के रेशों से निर्मीत होते है । मणिपुर में पेन अथवा मेनम नामक नारियल खोल के अनुनादी तथा एक तार वाले वाघ को लोटे की कमान में बालों द्वारा रगडकर बजाया जाता है। उन कमानों में दोनो और घुंघरू बधें रहते है। जिससे संगीत में विशेष प्रकार का आनन्द आता है । बिहार के संथाला द्वारा गायन में बजाये जाने वाला बनम भी इन्ही वाघो मे से एक वाघ है। इसमें केवल तांत का एक तार लगा होता है और कमानी द्वारा बजाया जाता है। इसी तरह आंध्रप्रदेश के साधु संत लोहे के दो तार वाले नारियल के खोल युक्त जिसे तेनकयार्बुरा को गायन के साथ लकडी के धनुषाकार गज से बजाते है तो मध्यप्रदेश के आदिवासी चिकारा को बांस तथा बालोंसे बनी छोटी कमानी से गायन तथा लोक नृत्यों के साथ बजाते है। वैसे तो ताम्बें और दुसरा लोहे का मुख्यतः दो ही तार लगाते है परन्तु तरब से मिलता झुलता सात तार और लगाते है।

गरासियो के भोपा जाति द्वारा दो तार युक्त चिकारा बजाया जाता है जिसमें एक तार घोडे की पुंछ बाल के तथा दुसरी तार लोहे का होता है दोनो तार षडज और पंचम में मिलाये जाते है पतली झिल्ली अथवा खाल का डोरियो से कसे नारियल के खोल अथवा लकडी के टुकडे को तुम्बे के रूप में प्रयोग किया जाता है। कहीं कही लोहे के तारों की तख भी लगाई जाती है घुंघरू लगी छोटी कमान से चिकारे को बजाते है।

गज से बजाये जाने वाले तीन तार के वाघ लोक संगीत से व्याप्त है एवं लोक वाघों में उल्लेखनीय है त्रिपुरा के लोक गीतों के साथ संगत में प्रयोग होने वाला कम्पूरन जिसके बेलनाकार अनुनादक पर पती जडी जाती है। इस वाघ में एक तांत तथा दो लोहे के तार लगाये जातें है । अलवर के मेव तीन तार युक्त सारंगी से मिलता जुलता वाघ बजाते है मेवों द्वारा बजाये जाने के कारण इस वाघ को भी मेवों का चिकारा कहते है लोक गीतों के साथ जम्मु तथा कश्मीर में तीन तांत तथा चौदह प्रमुख लोहे की तरबों तथा हाथी दांत के काम के अलंकरण युक्त अनुनादक वाला साजे कश्मीर प्रमुख है। इसका गज थोडा मुडा रहता है।

लोक वादको ने इसे बनावट निर्माण प्रकिया, वादन क्रिया के साथ उत्तरोतर तारो की संख्या के साथ वृद्वि करके इसे अधिक से अधिक विकसीत रूप प्रदान करने का प्रयास किया एवं संगीत उपयोगी बनाने का

कार्य किया । इससे तारो की संख्या बढाकर चार कर दिया जम्मु कश्मीर में दो तांत , दो लोहे के मुख्य तारों तथा 19 लोहे की तरबों वाला सरन, वाघ विशेष लोकप्रिय रहा है । लकडी को खोखला दो भागों में विभाजित अघोभाग पर भेड अथवा बकरी की खाल मंढकर दो तांत तथा दो लोहे के तारो का विशेष प्रचलन रहा है । मणिपुर में भी ऐसा ही चार तारों वाला सनन्त , नामक वाघ लोकप्रिय है । सन्नत में तुम्बे अथवा अघोभाग पर सरीसृप खाल मंढी जाती है । गुजर जाति का भोपा बगरावत के कथा वाचको द्वारा इसे बजाये जाने वाला जन्तर इसराज और दिलरूबा से मिलता है। और बांस के दण्ड में दो तुम्बे तथा पशु की खाल से 14 परदे चिपकाते है । जन्तर के दो तार से षडज तथा दो पंचम से मिलाये जाते है मध्यप्रदेश में जंतर को कमान से वादन किया जाता है जम्मु कश्मीर में जोगियो द्वारा प्रयुक्त बेडे सारंगी के 3 लोहे दो तांत के तारों के अतिरिक्त लोहे की 18 तरबे लगायी जाती है अपने देश में रबाब जवा से बजाया जाता था। परन्तु अरब देशों में गायको की संगत के लिए प्रचार में आने वाली चार तार से युक्त वाले रबाब भी गज से बजाये जाते थे। जम्मूकश्मीर में ही प्रचलित चक्कर मे नारियल खोल की तूबी तीन बालो में बटे हुए तथा तीन लोहे के तार लगाये जाते है यदाकदा कहीं लोहे के तीन बाल तरबो के रूप में लगाये जाते है ।

इसमें कोई दो राय नहीं कि सारंगी निश्चित ही शास्त्रीय संगीत को समृद्व और प्रकाशित करने वाले वादको को सारंगी को समावेश करने की प्रेरणा मिली होगी सारंगी उन लोक वाद्यों में है जिसमें शास्त्रीय संगीत को समृद्व किया है अपने अतिमाधुर्य और असीम समता एवं परिचायक एवं अद्वितीय विलक्षण गुण से समृद्व सारंगी ने पारखीजनों को बरबस अपनी ओर खीचा और इसे जैसे की तैसा स्वीकार हो गया और इन्हीं कारणों से सिंधी , धानी, जोगिया , गुजराती सारंगी तथा शास्त्रीय संगीत के प्रयोग में आनेवाली सारंगी की निर्माण शैली की रूप रेखा तारो की व्यवस्था में इतनी अधिक समानता होने के कारण भेद करना दुस्कर होता है संगीतकारो ने अपनी प्रतिभा संगीत के सुक्ष्म ज्ञान से और सुन्दरगज चालन से परिर्वतन कर इसे और भी सुन्दर सुव्यवस्थित बनाया है।

सारंगी का प्रभाव चाहे लोक संगीत हो या उपशास्त्रीय संगीत में फिर भी शास्त्रीय संगीत में सारंगी का स्थान वाद्यों में स्थान विशेष रहा है यहां विशेष तौर पर यह भी कहना उचित होगा कि यह वाद्य चाहे एकल वादन से या फिर सात संगत और दोनो में ही अपनी अमीट छाप छोडी है ।

क्षैत्रीय वाद्य

दूसरी से पाचवी तथा तैरवी शताब्दी के बीच बने मन्दिरों , गुफाओं के चित्रों उत्कीर्ण भिती चित्रों से गज से बजाये जाने वाले वाद्यों का उल्लेख मिलता है । आन्ध्रप्रदेश में विजयवाडा तथा मैसूर के निकट दसवी शताब्दी के समकालीन ग्रन्थों में गज से बजाये जाने वाले वाद्यों का आकार वायलिन से बहुंत मिलता है । बंगाल के विष्णुगुप्त मन्दिर में सरिन्दा पश्चिमि भारत के कतिपय मन्दिरों में सारंगी जैसा वाद्यों का चित्रण मिलता है । देश का शायद ही कोई भाग होगा जहां पर सारंगी या इससे मिलते झुलते गज वाद्यों का किसी ने किसी रूप चलन न हो यहां यह बात जरूरी है कि वाद्यों की अनुयारी साउण्ड बोक्स अथवा रिजोनेटर आजकल की भांति सुडोल और चिकने न होकर सामान्य लकडी के खोल अथवा नारियल से बने होते है इन वाद्यों को कंधे से सटाकर बजाया जाता रहा है। ऐसे वाद्य क्रमशः राजस्थान में **रावणहत्था** ,महाराष्ट् तथा आन्ध्रप्रदेश के प्राधानों की **किगंरी,** केरल के पल्लवों में **गुंजे** ,मणिपुर के **पैन** , उडिसा के **बनम**, यह सभी वाद्य गज से बजाये जाते है।

सारांशः–

सारंगी एक संपूर्ण वाघ है जो भारत वर्ष के सभी क्षेत्रों में किसी ना किसी रूप में कहलाया जाकर सारंगी के रूप में विकसीत हुआ।अब जब विभिन्न क्षेत्रों में इस वाघ का वादन किया गया तो इस वाघ के नाम भी अलग अलग होना स्वभाविक है।संगीत की विभिन्न गायन शैलियों में संगत वाघ के रूप में काम आने के

कारण भारतवर्ष की विभिन्न लोक गायन शैलियों में भी इस वाघ को विभिन्न रूपों मे देखा गया।हमनें अलग अलग क्षेत्रों के भिन्न भिन्न सांरगी के समकक्ष वाघों का जिक्र किया है।

संदर्भ

1. 'उत्तर भारतीय संगीत में सांरगी की उपादेयता– पृष्ठसंख्या 105 by Dr.N.M.Sharma Jaipur.
2. 'उत्तर भारतीय संगीत में सांरगी की उपादेयता– पृष्ठसंख्या 107 by Dr.N.M.Sharma Jaipur.
3. सेनिया घरान के उस्ताद मोईनुददीन खां से साक्षात्कार दिनांक 20.03.2011 स्थान– अहमदाबाद।

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com